## ३५ शकट

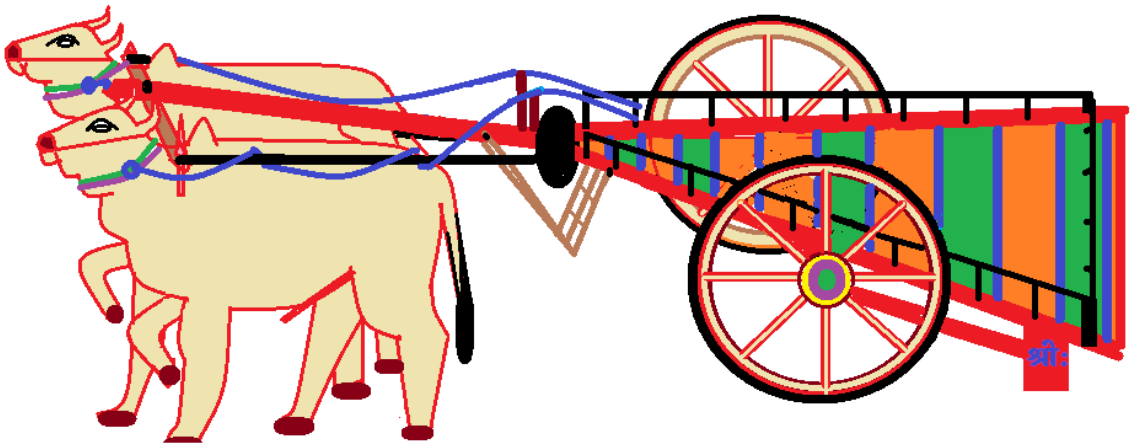




३५ शकट- याग में प्रयुज्यमान यव, व्रीहि आदि हविपदार्थों को जंगल से काटकर जिस पर लादकर यज्ञभूमि तक लाया जाता है, वह शकट कहलाता है। इसका उपयोग इष्टि तथा सोमयाग में आवश्यक रूप से होता है। "श्रपणस्य पश्चादनस्तिष्ठत्समंगम्" का.श्रौ.सू.- २/३/१२

## ३६ रथ

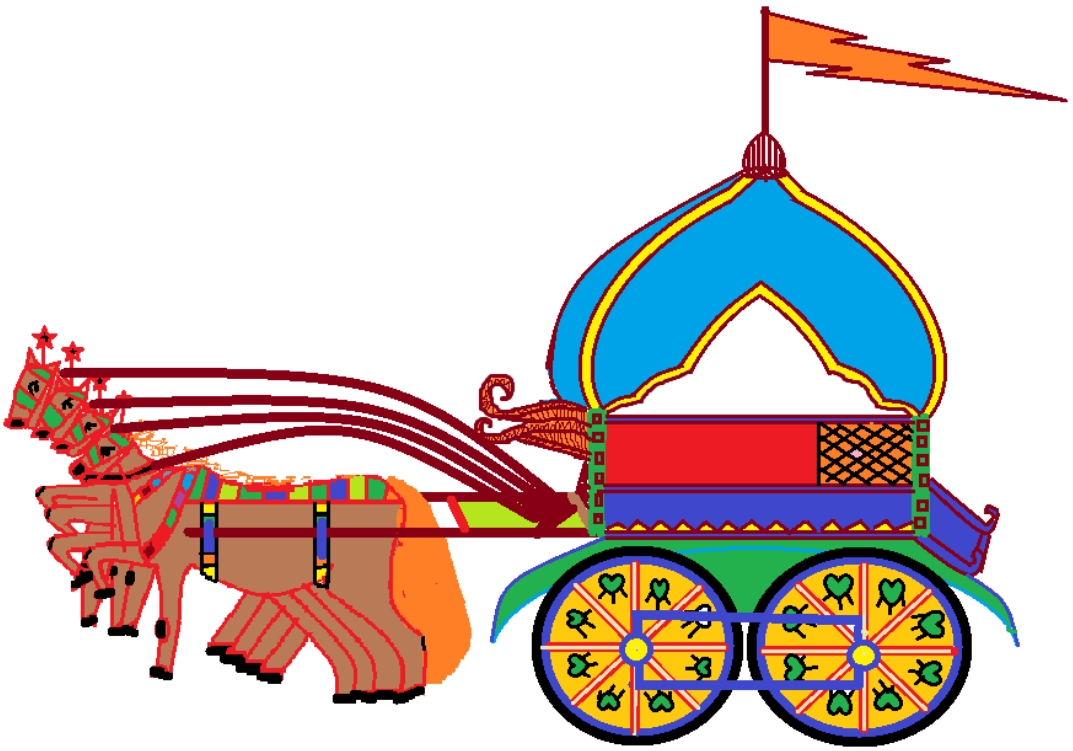



३६ रथ- वाजपेयादि सोमयागों में रथारोहण का विधान है। एतदर्थ रथ की आवश्यकता होती है। "रथावहरणम्" का.श्रौ.सू.- १४/३/१, अथ वाजपेये सप्तदशानां रथानां त्रयस्त्रयोऽश्वाः।" बौ.श्रौ.सू.- २५/३३